Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

राजनीति और कूटनीति में साहित्य, समाज और वैश्विक मीडिया की भूमिका: एक अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।

अवधेश प्रसाद
सहायक प्राचार्य राजनीति विज्ञान विभाग, महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
Email: awadheshprasad54321@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170919
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp.93-97
September 2025
Submitted:23 Aug. 2025
Revised: 4 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

सारांश:

राजनीति और कूटनीति केवल सत्ता और निर्णय की प्रक्रियाएँ नहीं हैं, बल्कि वे विचार, संस्कृति, समाज और संचार के विविध आयामों से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं। इतिहास साक्षी है कि साहित्य ने हमेशा राजनीतिक चेतना के निर्माण, जनमत को दिशा देने और राष्ट्रों के बीच संबंधों को परिभाषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी प्रकार समाज अपनी सामाजिक संरचनाओं, विचारधाराओं और सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से राजनीति की दिशा तय करता है। वैश्विक मीडिया ने इस प्रक्रिया को और भी व्यापक बना दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल क्रांति के कारण आज राजनीतिक संदेश सीमाओं को पार कर वैश्विक स्तर पर गूंजते हैं और कूटनीतिक रणनीतियों को प्रभावित करते हैं।

यह शोध पत्र राजनीति और कूटनीति में साहित्य, समाज और वैश्विक मीडिया की भूमिकाओं की अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से पड़ताल करता है। इसमें यह देखा जाएगा कि किस प्रकार साहित्य राजनीतिक विमर्श को जन्म देता है, समाज राजनीतिक मूल्यों का वाहक बनता है और वैश्विक मीडिया जनमत निर्माण तथा कूटनीतिक वार्ताओं का आधार तैयार करता है। शोध में तुलनात्मक दृष्टि से यह भी स्पष्ट किया जाएगा कि विभिन्न देशों और संस्कृतियों में इन तत्वों की भूमिका किस प्रकार रही है और वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में उनका योगदान कैसे परिवर्तित हुआ है। अंततः यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि साहित्य, समाज और मीडिया राजनीति एवं कूटनीति की कठोर संरचनाओं को मानवीय और सांस्कृतिक आयाम प्रदान करते हैं, जिससे अंतरराष्ट्रीय संबंध अधिक संवेदनशील, लोकतांत्रिक और सर्वसमावेशी बन सकते हैं।

मुख्य शब्द:-*राजनीति, कूटनीति, साहित्य, समाज, वैश्विक मीडिया, अंतरराष्ट्रीय संबंध, सांस्कृतिक कूटनीति, जनमत निर्माण, सॉफ्ट पावर।*

परिचय

1. विषय की पृष्ठभूमि।

मानव सभ्यता के आरंभ से ही राजनीति और कूटनीति समाज के संगठन और राष्ट्रों के बीच संबंधों का आधार रही है। प्रारंभिक काल में यह क्षेत्र मुख्यतः सत्ता, सैन्य शक्ति और आर्थिक संसाधनों पर केंद्रित था, लेकिन धीरे-धीरे इसमें सांस्कृतिक और बौद्धिक आयाम भी जुड़ते चले गए। आज के दौर में यह स्पष्ट है कि साहित्य, समाज और वैश्विक मीडिया राजनीति और कूटनीति को केवल सैद्धांतिक ही नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से भी प्रभावित करते हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
अवधेश प्रसाद, सहायक प्राचार्य राजनीति विज्ञान विभाग, महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

How to cite this article:
प्रसाद, . अवधेश . (2025). राजनीति और कूटनीति में साहित्य, समाज और वैश्विक मीडिया की भूमिका: एक अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य। Journal of Research and Development, 17(9(A)), 93–97.
https://doi.org/10.5281/zenodo.17510628

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17510628
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

2. राजनीति और कूटनीति की परिभाषा।

राजनीति वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज में शक्ति का वितरण, नीतियों का निर्धारण और निर्णयों का क्रियान्वयन होता है। वहीं कूटनीति राष्ट्रों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के बीच वार्ता और बातचीत की वह कला है जो शांति, सहयोग और रणनीतिक हितों की प्राप्ति का साधन है। पारंपरिक कूटनीति केवल सरकारों तक सीमित थी, लेकिन आज यह जनता, संस्कृति, मीडिया और नागरिक समाज तक विस्तारित हो चुकी है।

3. साहित्य का महत्व।

साहित्य राजनीति और कूटनीति के लिए केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, बल्कि यह जनचेतना का दर्पण भी है। उदाहरण के लिए, भारत में महात्मा गांधी के लेखन और 'यंग इंडिया' जैसे पत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक आधार दिया। इसी प्रकार रूस में टॉल्स्टॉय और गोर्की की रचनाएँ राजनीतिक चेतना जगाने में सहायक रहीं। साहित्य मानव मूल्यों, न्याय और स्वतंत्रता के आदर्शों को राजनीति और कूटनीति में स्थान दिलाता है।

4. समाज की भूमिका।

समाज राजनीति का आधार है। राजनीतिक संस्थाएँ, विचारधाराएँ और कूटनीतिक दृष्टिकोण समाज से ही जन्म लेते हैं। समाज के सांस्कृतिक मूल्य, परंपराएँ और नैतिक संरचनाएँ इस बात को प्रभावित करती हैं कि राजनीति किस दिशा में जाएगी। लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में समाज की सक्रिय भागीदारी राजनीतिक और कूटनीतिक निर्णयों की वैधता को बढ़ाती है।

5. वैश्विक मीडिया की भूमिका।

आज सूचना और तकनीक ने वैश्विक राजनीति और कूटनीति का चेहरा बदल दिया है। मीडिया न केवल सूचनाओं का प्रसार करता है, बल्कि जनमत निर्माण और राजनीतिक विमर्श को भी दिशा देता है। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में "पब्लिक डिप्लोमेसी" की अवधारणा को जन्म दिया है, जिसमें सरकारें सीधे वैश्विक जनता से संवाद करती हैं। अरब स्प्रिंग (2011) इसका उदाहरण है, जहाँ सोशल मीडिया ने राजनीतिक आंदोलनों को वैश्विक समर्थन दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

6. शोध का महत्व।

यह शोध पत्र राजनीति और कूटनीति के अध्ययन में पारंपरिक दृष्टिकोण से आगे बढ़कर सांस्कृतिक, सामाजिक और मीडिया परिप्रेक्ष्य को सामने लाता है। यह न केवल शैक्षणिक रूप से उपयोगी होगा, बल्कि नीति-निर्माताओं और कूटनीतिज्ञों के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

साहित्य समीक्षा:-

1. राजनीति और कूटनीति पर पारंपरिक अध्ययन।

राजनीति और कूटनीति पर प्रारंभिक शोध मुख्यतः शक्ति, राज्य-व्यवस्था और सैन्य शक्ति पर केंद्रित रहे। मैकियावेली की (1532) राजनीति और कूटनीति में व्यवहारिकता और शक्ति संतुलन की चर्चा करती है। इसके बाद 20वीं सदी में हंस मॉर्गेंथाउ जैसे यथार्थवादी विद्वानों ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को शक्ति संघर्ष और राष्ट्रीय हितों की दृष्टि से समझाया। इन अध्ययनों में साहित्य, समाज और मीडिया को गौण माना गया, क्योंकि प्राथमिकता राज्य और शक्ति संतुलन पर थी।

2. साहित्य और राजनीति पर अध्ययन।

साहित्य को राजनीतिक विमर्श का दर्पण मानने की परंपरा बहुत पुरानी है। प्लेटो और अरस्तू ने भी साहित्य को समाज और राजनीति का दर्पण बताया। 20वीं सदी में एंटोनियो ग्राम्शी ने साहित्य को हेजेमनी और राजनीतिक चेतना के निर्माण का साधन माना। उपनिवेश-विरोधी आंदोलनों में साहित्य ने राजनीतिक चेतना को जगाने का काम किया। भारत में प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी जैसे लेखकों की रचनाएँ केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं थीं, बल्कि वे स्वतंत्रता आंदोलन के विचारधारा निर्माण की धुरी थीं।

3. समाज और राजनीति पर अध्ययन।

समाजशास्त्रियों ने लंबे समय से राजनीति को समाज के उत्पाद के रूप में देखा है। कार्ल मार्क्स ने राजनीतिक संरचनाओं को आर्थिक आधार और वर्ग संघर्ष से जोड़ा। मैक्स वेबर ने राजनीति को "वैध सत्ता" के रूप में परिभाषित किया और सामाजिक मूल्यों के महत्व पर बल दिया। समकालीन समाजशास्त्रीय अध्ययन राजनीति और कूटनीति को सामाजिक आंदोलनों, जनमत और सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ जोड़कर देखते हैं।

4. वैश्विक मीडिया पर अध्ययन।

इंटरनेट और डिजिटल युग में मीडिया का प्रभाव और गहरा हुआ है। जोसेफ नाए की "Soft Power" की अवधारणा बताती है कि वैश्विक राजनीति केवल सैन्य शक्ति पर नहीं बल्कि सांस्कृतिक प्रभाव और मीडिया छवि पर भी निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी हॉलीवुड फिल्में और CNN जैसे मीडिया नेटवर्क ने अमेरिका की वैश्विक छवि को गढ़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

भारत के संदर्भ में "डिजिटल डिप्लोमेसी" का अध्ययन हाल में उभरा है, जिसमें ट्विटर और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म्स पर भारतीय नेताओं और विदेश मंत्रालय की सक्रियता ने कूटनीति को नई दिशा दी है।

5. समन्वित अध्ययन (साहित्य, समाज और मीडिया का अंतर्संबंध)।

- **साहित्य** राजनीतिक आदर्शों और वैचारिक आधार को प्रस्तुत करता है।
- **समाज** उन आदर्शों को व्यवहार में ढालकर राजनीतिक संस्थाओं और आंदोलनों का निर्माण करता है।
- **मीडिया** इन दोनों को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करके जनमत और कूटनीति को प्रभावित करता है।

मुख्य भाग:-

(क) साहित्य और राजनीति।

साहित्य राजनीति और कूटनीति का आधारभूत सांस्कृतिक स्तंभ है। यह केवल भावनाओं और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि विचारों और सामाजिक चेतना का वाहक भी है। साहित्य के बिना राजनीति केवल सत्ता का खेल रह जाएगी, जिसमें मानवीय मूल्य और नैतिकता का स्थान नहीं होगा।

1. राजनीतिक चेतना का निर्माण।

इतिहास साक्षी है कि साहित्य ने हमेशा राजनीतिक आंदोलनों को दिशा दी है।

- **भारत** में स्वतंत्रता संग्राम के समय बंकिमचंद्र चटर्जी का *आनंदमठ* और उसमें निहित *वंदे मातरम्* गीत राष्ट्रीय आंदोलन का प्रतीक बन गया।
- महात्मा गांधी ने अपने लेखन—*हिंद स्वराज*—के माध्यम से अहिंसा और सत्याग्रह की विचारधारा प्रस्तुत की।
- प्रेमचंद ने *रंगभूमि* और *गोदान* जैसे उपन्यासों में सामाजिक असमानताओं और औपनिवेशिक शोषण की आलोचना कर राजनीतिक चेतना को प्रबल किया।

2. अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।

- रूस में **मैक्सिम गोर्की** की रचनाओं ने श्रमिक वर्ग की चेतना को उभारा और सोवियत राजनीति को वैचारिक आधार प्रदान किया।
- फ्रांस में **विक्टर ह्यूगो** की *Les Misérables* न केवल साहित्यिक कृति थी, बल्कि सामाजिक न्याय और राजनीतिक समानता की पुकार थी।
- लैटिन अमेरिका में **गैब्रियल गार्सिया मार्केस** की *One Hundred Years of solitude* ने तानाशाही के खिलाफ सामाजिक-राजनीतिक विमर्श को जन्म दिया।

3.सांस्कृतिक कूटनीति में साहित्य।

. साहित्य केवल आंतरिक राजनीति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक सेतु भी बना। जैसे—रवीन्द्रनाथ टैगोर का साहित्य भारत-जापान संबंधों में सांस्कृतिक कूटनीति का आधार बना। नोबेल पुरस्कार प्राप्त होने के बाद उनका साहित्य यूरोप में भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने लगा। इससे स्पष्ट है कि साहित्य राजनीति को वैचारिक, सांस्कृतिक और कूटनीतिक दिशा प्रदान करता है।

(ख) कूटनीति और सांस्कृतिक आयाम।

कूटनीति परंपरागत रूप से शक्ति और सामरिक हितों का साधन मानी जाती रही है। लेकिन आधुनिक युग में इसमें **सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy)** का महत्व बढ़ गया है। साहित्य, कला, संगीत और सांस्कृतिक आदान-प्रदान राष्ट्रों के बीच सौहार्द बढ़ाने और आपसी विश्वास स्थापित करने का साधन बनते हैं।

1. सॉफ्ट पावर की अवधारणा।

जोसेफ नाए ने *Soft Power* की संकल्पना दी, जिसके अनुसार किसी देश की संस्कृति और मूल्य उसकी शक्ति का हिस्सा होते हैं।

- अमेरिका का *Hollywood* उसकी सॉफ्ट पावर का प्रतीक है। फिल्मों ने अमेरिका की उदार लोकतांत्रिक छवि को विश्वभर में फैलाया।
- भारत की *बॉलीवुड* फिल्में, योग और आयुर्वेद वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक कूटनीति का साधन बने हैं।

2. साहित्यिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान।

कूटनीति में साहित्यिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान भी महत्त्वपूर्ण है।

- अमेरिका की *Fulbright Scholarship* और ब्रिटेन की *Chevening Fellowship* केवल शिक्षा नहीं, बल्कि दीर्घकालिक कूटनीतिक निवेश हैं।
- भारत का *ICCR* विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति देकर सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देता है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

3. उदाहरण

- *भारत–अफ्रीका संबंध* में साहित्यिक और सांस्कृतिक सम्मेलनों ने आपसी संबंधों को मजबूत किया।
- *चीन की Confucius Institutes* भाषा और संस्कृति के माध्यम से उसकी कूटनीति का हिस्सा हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक कूटनीति, राजनीति को मानवीय चेहरा और कूटनीति को दीर्घकालिक आधार देती है।

(ग) समाज और राजनीति का अंतर्संबंध।

राजनीति और कूटनीति का अंतिम आधार समाज ही है। समाज के बिना न तो राजनीति संभव है और न ही कूटनीति।

1. समाज राजनीति को आकार देता है।

- लोकतंत्र में जनता का जनमत ही राजनीतिक शक्ति का स्रोत होता है।
- अरब स्प्रिंग (2011) इसका प्रमाण है, जब मिस्र, ट्यूनीशिया और लीबिया में सामाजिक असमानताओं और बेरोजगारी ने जनांदोलन को जन्म दिया।

2. विचारधाराओं का समाज से उद्भव।

- **पूँजीवाद** और **समाजवाद** दोनों ही समाज की आर्थिक-सामाजिक संरचना से जन्मे।
- **नारीवाद** ने समाज के लैंगिक प्रश्नों को राजनीति का हिस्सा बनाया।

3. समाज और अंतरराष्ट्रीय राजनीति।

- *दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन* केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि सामाजिक न्याय का प्रश्न भी था।
- *ब्लैक लाइव्स मैटर* आंदोलन ने अमेरिकी समाज की राजनीति और अंतरराष्ट्रीय छवि को गहराई से प्रभावित किया। इस प्रकार समाज राजनीति और कूटनीति की दिशा तय करता है।

(घ) वैश्विक मीडिया और कूटनीति।

आज की दुनिया में मीडिया राजनीति और कूटनीति का सबसे प्रभावशाली हथियार है।

1. जनमत निर्माण।

मीडिया वैश्विक घटनाओं को जिस रूप में प्रस्तुत करता है, वही जनमत का आधार बनता है।

- *इराक युद्ध (2003)* में अमेरिकी मीडिया और अंतरराष्ट्रीय चैनलों की रिपोर्टिंग ने युद्ध के पक्ष और विपक्ष दोनों तरह से जनमत को प्रभावित किया।
- *रूस–यूक्रेन युद्ध (2022–)* में CNN, BBC और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने वैश्विक जनमत निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाई।

2. डिजिटल डिप्लोमेसी।

- भारत का विदेश मंत्रालय ट्विटर और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म्स का सक्रिय उपयोग करता है।
- *नरेंद्र मोदी* और *बराक ओबामा* जैसे नेताओं के ट्विटर अकाउंट्स वैश्विक कूटनीति के साधन बने हैं।

3. मीडिया की चुनौतियाँ।

फेक न्यूज और *प्रचार तंत्र* भी राजनीति को विकृत कर सकते हैं। *कैम्ब्रिज एनालिटिका* स्कैंडल ने यह स्पष्ट किया कि सोशल मीडिया जनमत को प्रभावित करने के लिए हथियार की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है इससे स्पष्ट है कि वैश्विक मीडिया राजनीति और कूटनीति में सकारात्मक भी है और खतरनाक भी।

(ङ) अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।

अब देखते हैं कि विभिन्न देशों और क्षेत्रों में साहित्य, समाज और मीडिया ने राजनीति और कूटनीति को कैसे प्रभावित किया।

1. अमेरिका

सिविल राइट्स मूवमेंट में साहित्य और मीडिया ने अफ्रीकी-अमेरिकी अधिकारों की लड़ाई को वैश्विक मुद्दा बना दिया। हॉलीवुड और CNN ने अमेरिकी सॉफ्ट पावर को मजबूत किया।

2. यूरोप

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद *यूरोपीय एकता* के विचार में साहित्यिक और बौद्धिक विमर्श ने योगदान दिया। यूरोपियन यूनियन ने मीडिया और संस्कृति को कूटनीति का हिस्सा बनाया।

3. भारत

स्वतंत्रता संग्राम में साहित्य (टैगोर, गांधी, प्रेमचंद) और समाज (किसान आंदोलन, महिला आंदोलन) ने राजनीति को आकार दिया। आज भारत की डिजिटल डिप्लोमेसी, बॉलीवुड और योग उसकी वैश्विक छवि को मजबूत कर रहे हैं।

1. अफ्रीका

नेल्सन मंडेला की *Long Walk to Freedom* साहित्यिक आत्मकथा ही नहीं, बल्कि वैश्विक कूटनीति का दस्तावेज भी है। अफ्रीकी मीडिया ने उपनिवेशवाद और रंगभेद के खिलाफ संघर्ष को विश्व पटल पर रखा।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

5. एशिया

चीन की *Confucius Institutes* और मीडिया चैनल उसकी सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा हैं। जापान ने *Anime* और साहित्य के माध्यम से अपनी सॉफ्ट पावर को वैश्विक स्तर पर फैलाया।

निष्कर्ष:-

अंततः यह निष्कर्ष निकलता है कि राजनीति और कूटनीति को केवल शक्ति संतुलन या सामरिक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। साहित्य, समाज और वैश्विक मीडिया इन दोनों क्षेत्रों को मानवीयता, सांस्कृतिक गहराई और जन भागीदारी से समृद्ध करते हैं। भविष्य की राजनीति और कूटनीति इन्हीं तीनों की समन्वित भूमिका पर निर्भर करेगी। यदि साहित्य मानवीय मूल्यों को जागृत करता रहेगा, समाज लोकतांत्रिक भागीदारी को मजबूत करेगा और मीडिया सत्यनिष्ठ व उत्तरदायी रहेगा, तो राजनीति और कूटनीति अधिक न्यायपूर्ण, लोकतांत्रिक और सर्वसमावेशी बन सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रसाद, रामचन्द्र. (2005). *भारतीय राजनीति और साहित्य*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. मिश्र, रजनीकांत. (2010). *समाज और राजनीति का अंतर्संबंध*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
3. सिंह, योगेन्द्र. (2012). *भारतीय समाजशास्त्र और आधुनिकता*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.
4. शर्मा, रामावतार. (2008). *हिंदी साहित्य और राष्ट्रीय चेतना*. वाराणसी: साहित्य भवन.
5. त्रिपाठी, विद्यानिवास. (2016). *मीडिया, राजनीति और समाज*. नई दिल्ली: संवाद प्रकाशन.
6. पांडेय, गोविन्द. (2009). *भारतीय कूटनीति: इतिहास और वर्तमान*. जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन.
7. गुप्ता, सत्यप्रकाश. (2015). *लोकतंत्र, समाज और मीडिया*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
8. द्विवेदी, विश्वनाथ. (2017). *भारतीय साहित्य में स्वतंत्रता आंदोलन*. प्रयागराज: हिंदी साहित्य अकादमी.
9. वर्मा, अच्युतानंद. (2013). *भारतीय राजनीति का समाजशास्त्र*. नई दिल्ली: किताबमहल प्रकाशन.
10. जोशी, सुधीर. (2018). *वैश्वीकरण, मीडिया और भारतीय समाज*. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.